पाठ - 31 : विराटा की पद्मिनी

मुख्य विषय

यह वृन्दावन लाल वर्मा का एक ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें एक दाँगी कन्या कुमुद के प्रेम और बलिदान की कहानी प्रस्तुत की गई है। इसमें बुंदेलखंड की वीरता, जुझारूपन, संस्कृति, प्राकृतिक सुषमा और वहाँ के जनजीवन का भी अंकन किया गया है।

आपने संभवतः 'चितौड़ की पद्मिनी' का नाम सुना होगा। उसकी कहानी भी सुनी होगी। कहा जाता है कि उसके सौंदर्य पर मुग्ध होकर अल्लाउद्दीन खिलजी ने उसे पाने के लिए चित्तौड़गढ़ पर आक्रमण किया था। जब गढ़ के टूटने की नौबत आई तो पद्मिनी के साथ गढ़ की सारी स्त्रियाँ एक साथ, एक विशाल चिता की आग में कूद गई। पद्मिनी के पति रत्नसेन के साथ सभी वीर राजपूत केसरिया बाना धारण करके हाथों में तलवारें लेकर गढ़ के बाहर निकले। अल्लाउद्दीन की सेना के साथ लड़ते हुए वे वीर गति को प्राप्त हुए। इस प्रकार अल्लाउद्दीन विजयी होकर भी पद्मिनी को न पा सका। कुमुद की कहानी का आधार भी यही है। वह भी दुश्मनों के कब्जे में आने से पहले बलिदान दे देती है।

कथा-सार

- 'विराटा की पद्मिनी' में बुंदेलखंड के कुछ छोटे-छोटे राज्यों के आपसी संघर्ष की कथा प्रस्तुत की गई है। ये राज्य थे: दलीप नगर, रामनगर, गढकुंडार, बड़ नगर आदि। कालपी मुगल साम्राज्य का एक सूबा था जिसका फ़ौजदार अलीमर्दान था। उस समय दिल्ली में फर्रुखसियर का (1713-1719) शासन था।
- बड़ नगर के पालर नामक गाँव में दुर्गा का एक प्रसिद्ध मंदिर था। वहीं नरपति दाँगी के घर एक सुंदर कन्या का जन्म हुआ, जो किशोरावस्था में पहुँचने पर दुर्गा के अवतार के रूप में प्रसिद्ध हो गई। उसका नाम कुमुद था। वह पद्मिनी कन्या कहलाती थी क्योंकि वह चंपा के समान गोरी थी उसके शरीर से सुगंध निकलती थी और वह कमल के समान कोमल थी।
- संयोगवश दलीप नगर का सनकी और अधपगला राजा नायक सिंह अपने दरबारियों के साथ पालर की झील में मकर संक्रांति का स्नान करने आया।
- राजकुमार कुंजर सिंह और सैनिक सरदार लोचन सिंह, देवी के दर्शन के लिए दुर्गा मंदिर गए। उसी समय कालपी के फ़ौजदार अलीमर्दान के दो मुसलमान सैनिक भी दर्शन के बहाने वहाँ आए। बातों-बातों में दलीप नगर और कालपी के सैनिकों में झड़प हो गई। फिर इस झड़प ने कालपी और दलीप नगर की सैनिक टुकड़ियों ने युद्ध का रूप ले लिया। मुसलमान सैनिक दुर्गा मंदिर को ध्वस्त कर दुर्गा की अवतार मानी जाने वाली दाँगी कन्या पद्मिनी का अपहरण करना चाहते थे। इधर दलीप नगर का राजा भी उसके सौंदर्य की कहानी सुन उसे अपने महल में रखना चाहता है।
- अपनी सनक में वह कालपी की सैनिक टुकड़ी पर आक्रमण कर बैठता है। मार-काट मच जाती है। तभी इस युद्ध में दलीप नगर के राजा की पराजय होने ही वाली थी कि एक

बहादुर बुंदेला देवी सिंह जो पालर में बारात के साथ दूल्हा वेश में आया था, राजा नायक सिंह की सहायता के लिए पहुँच गया और नायक सिंह की रक्षा हो गई। कालपी की सैनिक टुकड़ी भी पराजित होकर भाग गई।

- पर युद्ध में राजा और बुंदेला युवक दोनों घायल हो गए। उपचार के बाद देवी सिंह स्वस्थ होकर राजा के साथ रहने लगा। वह राजा का अत्यंत प्रिय पात्र बन गया।
- उधर दाँगी-कन्या कुमुद के प्रति श्रद्धा भाव होने पर भी राजकुमार कुंजर सिंह के मन में उसके प्रति अनुराग पैदा हो गया। कुमुद के मन में भी राजकुमार के प्रति वैसा ही अनुराग भाव जन्म लेता है। कुंजर सिंह कुमुद को दलीप नगर के राजा नायक सिंह और कालपी के फ़ौजदार अलीमर्दान दोनों से बचाने का संकल्प करता है।
- इस बीच दलीप नगर का राजा नायक सिंह अपने बिगड़ते स्वास्थ्य के कारण मर जाता है और उसके स्थान पर उसका प्राण-रक्षक देवी सिंह दलीप नगर का राजा बन जाता है। कुंजर सिंह, जो नायक सिंह का दासी-पुत्र था, इस निर्णय का विरोध करता है।
- नायक सिंह की छोटी रानी भी विद्रोह कर देती है। वह स्वयं दलीप नगर की गद्दी पाना चाहती है। इसके लिए वह अलीमर्दान को अपना राखीबंद भाई बनाती है। उसके पति स्वर्गीय नायक सिंह का प्रिय पात्र किंतु धूर्त नौकर रामदयाल उसकी सहायता करता है।
- कुंजर सिंह नए राजा देवी सिंह का तो विरोध करता है, पर वह अलीमर्दान से सहायता लेना पसंद नहीं करता। इस कारण कुंजर सिंह छोटी रानी के क्रोध का कारण बनता है। पर वह सिंहगढ़ के किले पर कब्जा करके वहीं रहने लगता है। छोटी रानी भी वहीं आ जाती है।
- अलीमर्दान कुमुद को अपने हरम में शामिल करना चाहता है। उसके भय से पिता नरपति सिंह कुमुद को पालर के दुर्गामंदिर से हटाकर विराटा के दुर्गामंदिर में ले जाता है। उधर कुछ दिनों तक सिंहगढ़ में रहने के बाद कुंजर सिंह को देवी सिंह से पराजित होकर सिंहगढ़ छोड़ना पड़ता है। वह भटकता हुआ विराटा के किले में पहुँचता है। वहाँ का राजा उसे दुर्गामंदिर की रक्षा का भार और तोपखाने का संचालन कार्य सौंपता है। छोटी रानी सिंहगढ़ के दुर्ग से निकल कर रामनगर राज्य की शरण लेती है। विराटा और रामनगर के राज्य एक-दूसरे के पुश्तैनी दुश्मन हैं।
- अलीमर्दान विराटा पर आक्रमण करता है। उसका उद्देश्य कुमुद को प्राप्त करना है।देवी सिंह अलीमर्दान का सामना करता है पर न चाहते हुए भी वह विराटा पर आक्रमण करने को बाध्य होता है। वह कुंजर सिंह को उसके विद्रोह के लिए दंड देना चाहता है।
- इस बीच कुंजर सिंह और कुमुद का अनुराग गंभीर प्रेम में परिणत हो गया है। वह अपने प्राण देकर भी कुमुद की रक्षा करने का संकल्प करता है।
- विराटा की गढ़ी, अलीमर्दान और देवी सिंह, दोनों की सेनाओं के बीच घिर जाती है। विराटा के राजा और सैनिक केसरिया वस्त्र धारण कर अलीमर्दान की सेना के साथ जौहर-युद्ध में कूद पड़ते हैं और मृत्यु का आलिंगन करते हैं। कुंजर सिंह कुमुद को अलीमर्दान के हाथों से बचाने के लिए उसे लेकर मंदिर से बाहर निकलता है। कुमुद, कुंजर सिंह के गले में

जंगली फूलों की एक माला डालती है, जो उसे स्वीकार है। वहाँ से दोनों अलग-अलग राहों से प्रस्थान करते हैं। कुंजर सिंह की भेंट देवी सिंह से हो जाती है, जहाँ युद्ध ज़ोरों पर है। कुंजर सिंह देवी सिंह के हाथों मारा जाता है।

- उधर अलीमर्दान कुमुद का पीछा करता है। पर वह उसके हाथ नहीं आती। वह बेतवा नदी में छलाँग लगाकर प्राण त्याग देती है। इस प्रकार कुमुद अपना नाम 'विराटा की पद्मिनी' सार्थक करती है।

उपन्यास की मुख्य विशेषताएं

- विराटा की पद्मिनी' उपन्यास में इतिहास, कल्पना और लोकतत्त्व का अद्भुत समन्वय है।
- कथानक में एक ओर साधारण पृष्ठभूमि के पात्रों के अद्भुत शौर्य, देश-प्रेम, लगन और बलिदान जैसे गुणों का चित्रण है, वहीं सामंती परिवेश में होने वाले षड्यंत्रों, स्वार्थसिद्धि, छल, भोग-विलास, अत्याचार आदि को भी चित्रित किया गया है।
- यह उदात्त प्रेम की कथा है, जिसका अंत आत्मोसर्ग में होता है।
- उपन्यास के पात्र मुख्यतः दो प्रकार के हैं- एक वे जो राज परिवारों से जुड़े हैं और दुर्गुणों के प्रतीक हैं। दूसरे वे जिनमें बुंदेलखंड की मिट्टी की महक है। वे सरलता, वीरता, त्याग, देशभक्ति और प्रेम के प्रतीक हैं।
- इसमें बुंदेलखंड की प्रकृति, लोक-जीवन, लोक-गीत, लोक-भाषा का समर्थ चित्रांकन हुआ है। इनसे उपन्यास की रोचकता बढ़ गई है।
- उपन्यास की भाषा परिनिष्ठित हिंदी है, उसमें लोक-भाषा का भी प्रयोग है। भाषा में कहीं-कहीं शिथिलता भी पाई जाती है और कहीं-कहीं भाषा जटिल और दुर्बोध हो गई है।
- इसके संवाद बड़े सरस और रोचक हैं। उनमें पात्रानुकूलता और परिस्थिति की माँग झलकती है। दरबारियों के संवादों में चाटुकारिता, छल, कपट और मरने-मारने की शब्दावली है। कुंजर सिंह और कुमुद के संवादों से उनका दिव्य प्रेम झलकता है। पात्र अपने सामाजिक स्तर के अनुकूल भाषा का प्रयोग करते हैं।
- उपन्यास में कुछ विशेष मार्मिक स्थल हैं। कुमुद की नारी भावनाएँ सहज विकसित होकर उदात्त स्थिति तक पहुँचती हैं और अंततः आत्मोसर्ग से परिचित होती हैं। अलीमर्दान पद्मिनी को अपनी रानी बनाने के लिए आक्रमण करता है। सबदल सिंह के सुझाव पर सभी जौहर व्रत का निर्णय लेते हैं और वीरगति को प्राप्त होते हैं।

अपना मूल्यांकन कीजिए

- इस उपन्यास से आपको क्या शिक्षा मिलती है ? स्पष्ट कीजिए।
- उपन्यासकार ने इतिहास को आधार बनाकर इस उपन्यास को कैसे समसामयिक बनाया है?
- पात्रों के चरित्र-चित्रण के आधार पर इस उपन्यास की समीक्षा कीजिए।